International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-2629(Print), E-ISSN 2320-5466, Issue-3, Vol-I, March-2013

शोध पत्र- हिन्दी

हरिनारायण व्यास की कविताओं में प्राकृतिक चेतना

* डॉ. संजीव खैमरिया

* अतिथि व्याख्याता हिन्दी, शा. कन्या महावि. शिवपुरी म.प्र.

हरि नारायण व्यास प्रयोगवाद और नई कविता के जाने माने साहित्यकार हैं। दूसरे सप्तक में इनकी कविताओं ने अपना विशेष स्थान बनाया। प्रयोगवाद एक ऐसा प्रयोग था जिसने अज्ञेय के नेतृत्व में साहित्य में आ रही सीमितता या संकीर्ण दायरों के हो रहे जमाव को हटाकर साहित्य के लिये मानों पूरी एक नई दुनिया ही दे दी। यही परिवर्तनशील चेतना जब साहित्य की एक शैली ही बन गई तब उसने स्वयं को नई कविता के रूप में प्रस्तुत किया।

हरिनारायण व्यास अज्ञेय के इसी दूसरे सप्तक के प्रयोग में सशक्त रूप में उभरे और नई कविता को भी उन्होंने एक गरिमा प्रदान की। जैसा कि उस दौर का स्वरूप था इस समय के साहित्यकारों ने हर विषय बस्तु को एक नऐ रूप में ही प्रस्तुत किया जिसमें प्रकृति भी शामिल थी। प्रकृति चित्रण एक ऐसा विषय है जो प्रत्येक युग में , प्रत्येक काल में , प्रत्येक कवि की रचनाओं का महत्वपूर्ण अंग है। समय के अनुसार उसे व्यक्त करने के तरीके भले ही भिन्न हो जायें किंतु वह कवियों से कभी अलग नहीं हो सकती। नई कविता भी प्रकृति से अछूती नहीं रह सकती थी किंतु उस प्रकृति चित्रण में एक नई ताजगी थी। अपने अपने नवीन प्रयोगों और बौद्धिकता के साथ उस समय के सभी कवियों ने प्रकृति को नये नजरिये से देखा व्यास जी भी इनमें से एक थे किंतु व्यास जी की प्रकृति चेतना में अन्य कवियों से एक अलग ही भिन्नता नजर आती है।

एक साहित्यकार प्रकृति को या तो पृष्ठभूमि रूप से दर्शाता है या फिर उसे अपने विचारों या अनुभूतियों के साथ जुड़ा हुआ दर्शाता है। किंतु व्यासजी ने प्रकृति को जीवन का प्रतिबिंब माना है। मानव जीवन में जो परिवर्तन होते हैं या जो भी परिस्थितियां आती हैं वही प्रकृति में भी व्यक्त होती हैं जिसे कम ही लोग देख पाते हैं। अर्थात् प्रकृति के परिवर्तन के साथ मानव जीवन में भी समानांतर प्रतिक्रियायें होती हैं जैसे शीत ऋतु अपने साथ एक ठहराव लाती है तो मानव जीवन भी अपनी गति को रोककर समय बदलने का इंतजार करता है। मौसम की मार से सहमे लोग आत्मविश्वास के साथ जब निश्चिंत होकर बसंत ऋतु में अपने रूके हुऐ काम करने लगते हैं तो प्रकृति भी उसके साथ ही मानो क्रियाशील हो जाती है। प्रकृति सिर्फ सुषमा या प्रेरणा ही नहीं है अपितु मानव जीवन को समय समय पर निश्चित कार्यों को करने का सचेतक भी है अर्थात् हर प्राकृतिक घटना मानव को क्या रणनीति अपनानी है यह निरंतर बताने वाली निर्देशक भी है। ऋतुओं का परिवर्तन अपने सभी उपादानों से हमारे सामने साकार अभिनय करता है और हमें अपनी योजनाओं के लिये संचालित करता है और हमें उस रंगमंचीय अभिनय को अपनी जीवन चर्या में प्रतिबिंबित करने और सादृश्य प्रतिक्रियायें करने के लिये उत्प्रेरित करता है। सर्वप्रथम बसंत से प्रारंभ करें तो शिशिर के जाने का समय जैसे ही नजदीक आता है बसंत पहले ही अपने आने की घोषणा करके जनमानस को उस भयानक पाश से मुक्त होने के लिये तैयार कर देता है–

1''हो गया हेमंत अब शिशिरान्त भी नजदीक है,
पात पीले गिर चुके तरू के तले, आज ये संक्रान्ति के दिन भी चले। नाश का घनघोर नक्कारा सुबह के आगमन को गूंज देकर डूबता जाता विगत के गर्भ में।
भागता पतझर अपनी ध्वंस की गठरी समेटे
पुष्पग्रीवा में नवोदित सूर्य की सुंदर किरण ने डाल दी है बांह अपनी दूर के भटके हुऐ दो प्राण तन आज फिर से मिल रहे हैं हंस हंस गले दिग दिगन्तों में बसंती का आवरण प्रसरित हुआ छू लिया चैतन्य ने प्रत्येक कण।''[1]

यह दृश्य सिर्फ सौंदर्य के लिये ही न होकर सबको उठाकर काम में लगा देने के लिये प्रस्तुत होता है–

2''ओ जगत के दीन जन अपने अडिग विश्वास का सूरज प्रकाशित हो गया, अब शिथिलता को विदा दो,जाचुके क्षण विवश आराम के,साफ करलो द्वार,घर,गलियां,नगर की,ग्राम की खेत का खलिहान का कचरा समेटो अब नयी सुंदर फसल के बीज के अंकुर निकलना चाहते हैं।
तोड़ दो,यह बांध,जिसे बांधकर रोकदी है,धार की गति,तुम इसे फिरसे,सृजन की धार पर लाओ भगीरथ फिर नयी यात्रा करो आरंभ अब शिशिरान्त भी नजदीक है।''[2]

ग्रीष्म का प्रचंड वेग किस तरह से जीवन में खलबली मचा देता है यह इन पंक्तियों में देख सकते हैं.लक्ष्य तक फैली डगर के कंटकों के डंक तोड़ो ,कंदरा के गर्भ में व्याकुल बिलखता है तुम्हारा विश्व तुम उसे विश्वास दो, इंसानियत की ज्योति दो, अब उठो कंधे मिलाकर फिर नया जीवन बसाओ दिग दिगंतों में बसंती वायु का परिधान फैला गल चुके सब शीत के उत्तुंग भूधर 3''घूमती सूखी, दुखी ,भूखी आंधियां,उजड़े हुऐ उद्यान सुखमय झोंपड़े, कुटिया महल के शीश पर फट गयी छाती,दरारें पड़ गयी हैं ,उर्वरा,शस्या धरा के वक्ष पर कंटकों

की भीड़ ,लंबे चीड़ तक के नीड़ सब खाली पड़े हैं, गिर गये पक्षी सुनहली पांख वाले आज असमय की भयानक ऊष्ण भापों ने झुलस उनका दिया तन भुन गया जीवन सदा को,''[3]

ऐसे आतंकपूर्ण वातावरण में वर्षा के पहले मेघ की क्या अहमियत होती है यह भी देखिये–

4''आज केवल एक तूही छा रहा,सूखे गगन में श्यामघन,कोटि मानव की दुखी आंखें लगी तुझ पर उतर बेखौफ नीचे,निज हृदय की स्नेह गरिमा बिंदु को बरसा यहा कर रहा जो भार तन मन पर वहन, दृढ़ लगन से रहा तू उसको संभाल

अब न बनना मोम का पर्वत,न दबना भार से, क्योंकि तेरी छांह में है मासूम और सुकुमार बच्चे स्नेह,ममतामूर्ति,मां,बहनें वतन की,ले रही पनाह,है जिन्हें विश्वास का उल्लास जीवन शक्तिदाता. .....आज तेरे देश की मजलूम जनता की सबल हुंकार नभ से सात पर्दों पार तक टंकार लेगी हे मनुज के प्राण तेरा स्वागतम् स्वागतम् शत स्वागतम् ।''[4] सिर्फ स्वागत ही नहीं उस वर्षा मेघ को आने के लिये बारंबार विनती भी की जा रही है–

5''उधर इस नीम की कलगी पकड़ने को झुके बादल नयी रंगत सुहानी चढ़ रही है सबके माथे पर,उड़े बगुले चले सारस हरस छाया किसानों में ,बरस भर की नई उम्मीद छाई है,बरसने के तरानों में,बरस जा रे,बरस जा,नई दुनिया के सुख संबल पड़े हैं खेत छाती चीरकर नाले नदी सूने,बिलखते दादुरों के साथ सूखे झाड़,रूखे झाड़ हवा बेजान होकर सिर पटकती रो रही सर सर जमीं की धूल है बदहोश भूली आज अपना घर, किलकता आ बरसता आ हमारी ओ खुशी बेकल ,उठे बादल झुके बादल। किलकती कोकिला बेमान होकर देखती जब चांद मुखड़े पर घटा सी छा गई है लट खड़ी है सिर लिये गागर तुम्हारी इंतजारी में, दरद करती कमर दिल कांपता है बेकरारी में जहां की बादशाही भी जहां पर सिर झुकाती है,उन्हीं कोमल किशोरी का दुखा कर दिल कभी रस ले सकोगे क्या अरे बेदिल।''[5] और जब आषाढ़ मेघ पानी बरसाता है तब प्रकृति का नव श्रृंगार देखते ही बनता है–

6''पहली असाढ़ की संध्या में नीलांजन बादल बरस गये'' फट गया गगन में नीलमेघ,पय की गगरी ज्यों फूट गई,बौछार ज्योति की बरस गई,झर गई बेल से किरन जूही मधुमय चांदनी फैल गई, किरनों के सागर बिखर गये पुलकाकुल धरती नमित नयन नयनों में बांधे स्वप्न नये हर पत्ते पर है,बूंद नई,हर बूंद लिये प्रतिबिंब नया,प्रतिबिंब तुम्हारे अंतर का,अंकुरके उरमें उतर गया भर गयी स्नेह की मधु गगरी गगरी के बादल बिखर गये''[6] लेकिन समय कभी एक सा नहीं रहता। यही बारिश कुछ समय बाद भयानक रूप धारण कर लेती है तब वही मानव मन कांपने लगता है जो उसके इंतजार में पलकें बिछाये बैठा था–

7''रात,दिन,बारिश,नमी,गर्मी,सबेरा,सांझ,सूरज,चांद,तारे,अजनबी सब,हम पड़े हैं,आंख मूंदे कान खोले, चीख और पुकार, हाहाकार,बेघर बार जन जन के रूदन के स्वर भरे हें कान में धूम के बादल लपट की बिजलियां घिर रहीं हैं प्राण में, कौन जाने यह हुआ क्या, और क्या होना अभी है,सब तरफ विघ्वंस की बर्छी उठी है,लक्ष्य जिसका है,हमारी जिंदगीकी चाह''[7]

ऐसे भयानक समय के बाद आई शरद ऋतु की रात्रि में चंद्रमा सारे झंझावातों को शांत कर देता है,तब जीवन फिर नयापन प्राप्त कर लेता है। यही नशीला चांद निरंतर परिश्रम से थके मानव के प्रेमी मन को कुछ क्षण विश्राम के गुजारने और उसमें अपने प्रिय के साथ एक नवीनता भर लेने और जीवन के उत्सवों को मनाने का अवसर भी देता है–

8'' नशीला चांद आता है,नयापन रूप पाता है सबेरे को छिपाती रात अंचल में, झलकती ज्योति निशि के नैन के जल में, मगर फिर भी उजेला छिप न पाता है, बिखर कर फैल जाता है।'' तुम्हारे साथ हम भी लूट लें ये रूप के गजरे, किरण के फूल से गूंथे यहां पर आज जो बिखरे, इन्हीं में आज धरती का सरल मन खिलखिलाता है। छिपे क्यों हो,इधर आओ,भला क्या बात छिपने की, नहीं फिर मिल सकेगी,यह नशीली,रात मिलनेकी''[8]

सिर्फ दृश्य वातावरण ही प्रकृति नहीं है बल्कि मन में उठने वाली भाव तरंगें भी प्रकृति के उपादानों से मेल खाती हैं। अतृप्त बंधनों से बंधा मन जब स्वतंत्र होना चाहता है तब उसे स्वतंत्रता की अनुभूति प्रकृति की विराटता में नजर आती है–

9'' इस पुरानी जिंदगी की जेल में, जन्म लेता है नया मन मुक्त नीलाकाश की लंबी भुजायें,हैं समेटे कोटि युग से सूर्य शशि नीहारिका के ज्योति तन .....किंतु मन ब्रह्मांड इससे भी बड़ा है जो कि जीवन कोठरी में जन्म लेता है नया बन, आज इस ब्रह्मांड में ही,उठ रहा है,प्रेरणा का जन्म, जीवनभरा,स्पंदनभरा,आषाढ़ का सुख पूर्ण धन''[9]

जैसा बर्षा के बाद शरद का आकाश स्वच्छ हो जाता है वैसे ही स्वतंत्रता की अनुभूति भी विस्त्त मुक्त आकाश के समान नजर आती है–

10''क्षिति दिगंचल चूमता आकाश,दिशि विदिशि की प्राण धारा,चेतना की मुरलिका से,शून्य वन गुंजित नया रव,आज भव में भर चला,उठ रहे श्रावण घटा से प्रिय मिलन क्षण जगमगाते हर निमिष में मुक्ति के आभास,ज्योति अब लेने लगी है जागरण की सांस.....मुक्ति में जीवन नहाकर, हर दिशा में फेंकता है,नव सृजन के फूल भर भर, और टूटे कर बढ़ाकर,झेलते खंडहर,अजानी आस,बाल पांखी तोड़ पिंजर,खोजने निज जीर्ण कोटर वायुमंडल चीरकर उड़ रहा ले नया विश्वास सृष्टि के सौंदर्य से सज्जित नया आकाश।''[10]

लेकिन उनका प्रकृति चित्रण सिर्फ प्राकृतिक ऋतुओं को देखकर ही नहीं उपजा है बल्कि तत्कालीन परिस्थितियों का साम्य उन्होंने उससे मिलती जुली प्राकृतिक स्थिति से करके देखा है। जैसे बसंत का आगमन स्वतंत्रता के पश्चात् देश के

नये विकास का संदेश भी देता है, गर्मी से पीड़ित जन द्वारा बर्षा का स्वागत उन्होंने नेहरू जी के प्रति समर्पित किया है। तूफानी झंझावातों से कांपता जीवन विभाजन और दंगों से क्षतविक्षत मानवता को दिखाता है। जहां एक ओर उनके प्रकृति वर्णन में प्रकृति में छायावादी लाक्षणिकता दिखती है वहीं वह जीवन का नितान्त अनिवार्य घटक भी नजर आती है। और उसकी हर प्रतिक्रिया मानव के लिये ही एक शिक्षा है। प्रकृति और जीवन अभिन्न हैं इसी कारण बिना किसी प्राकृतिक रूपक के उन्होंने कोई बात कही ही नहीं है। उनकी किसी भी कविता को लें तो उसमें हर अनुभूति प्रकृति से जुड़ी है। उनके काव्य संग्रह मृग और तृष्णा, त्रिकोण पर सूर्योदय,बरगद के चिकने पत्ते, आऊट पर रूकी ट्रेन,निद्रा के अनंत में जागते हुऐ, में प्रकृति आद्योपांत छाई हुई है जिसमें प्रकृति मानव मन की समस्त गतिविधियों पर अपना पूरा प्रभाव रखे नजर आती है। जीवन के प्रत्येक क्षण में और उसकी हर घटना में प्रकृति शामिल है।

वह सिर्फ एक वातावरण ही नहीं है बल्कि उसके साथ हर व्यक्ति का अभिन्न संबंध है। अकसर साहित्य में मानव मन अपने जीवन अनुभव में प्रकृति को भी उसी तरह की प्रतिक्रिया करते देखता है किंतु यहां प्रकृति क्रिया के रूप में है और मानव उससे प्रेरित होकर प्रतिक्रियायें करता है। वह उसी सी संचालित होता है। ऐसी रचनायें वही कर सकता है जो प्रकृति के साथ बहुत गहराई से जुड़ा हो और ऐसे व्यक्ति की प्रकृति चेतना निश्चित ही अन्यों से अधिक वास्तविक और स्वाभाविक होती है। निश्चय ही हरिनायण व्यास जी की प्रकृति चेतना अपने आप में विशिष्ट और महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ

1– शिशिरान्त–कविता– हरिनारायण व्यास।
2. शिशिरान्त–कविता– हरिनारायण व्यास।
3. नेहरूजी के प्रति–कविता– हरिनारायण व्यास।
4 नेहरूजी के प्रति–कविता– हरिनारायण व्यास।
5. उठे बादल झुके बादल–कविता– हरिनारायण व्यास।
6. वर्षा के बाद–कविता– हरिनारायण व्यास।
7. शरणार्थी–कविता– हरिनारायण व्यास।
8. नशीला चांद–कविता– हरिनारायण व्यास।
9. एक भावना–कविता– हरिनारायण व्यास।
10. मुक्ति के आभास–कविता– हरिनारायण व्यास।